पाठ => 1

सिल्वर वैडिंग

(मनोहर श्याम जोशी)

प्रश्न: 1 यशोधर बाबु की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबु असफल रहते हैं। ऐसा क्यों ?

उत्तर: 2 यशोधर बाबु की पत्नि समय को अच्छी तरह पहचानती है। वह जानती है कि बच्चों की सहानुभूति तभी प्राप्त की जा सके जब बच्चों की सोच के अनुसार चला जाए। व्यवहार भी यही कहता है, कि दूसरे उसके व्यक्तित्व के विकास पर किसी व्यक्ति विशेष या वाद का प्रभाव नहीं है। तीसरे संयुक्त परिवार के साथ उसका अनुभव सुखद नहीं रहा, उसकी इच्छाएँ अतृप्त रही। उसके अनुसार "मुझे आचार व्यवहार के ऐसे बंधनों में रखा गया मानो मैं जवान औरत नहीं, बुढ़िया थी। अब वह बेटों के कहने के हिसाब से कपड़े पहनती है, वह बेटों के मामले भी दखल नहीं देती।"

दूसरी तरफ यशोधर बाबु स्वयं को बदल नहीं पाते वे सदैव किसी न किसी उलझन के शिकार हैं। वे सिद्धांतवादी हैं। इस कारण वे परिवार के सदस्यों से तालमेल नहीं बिठा पाते, उनपर किशनदा का प्रभाव है, जो परंपरा को ढोते हुए अंत में फटे हाल मरे। वे संयुक्त भारतीय परिवार परंपराओं को बनाए रखना चाहते थे।

परंतु परिवार उन्हें निरर्थक मानता है। अंत में उन्हें अनेक विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

प्रश्न:2 पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते / सकती हैं?

उत्तर:2 पाठ में जो हुआ होगा वाक्य पहली बार तब आता है जब यशोधर किशनदा के किसी जाती भाई से उनकी मौत का कारण पूछते हैं, तो उत्तर मिलता है — "जो हुआ होगा" अर्थात् पता नहीं। इसका अर्थ यह है, कि किशनदा की मृत्यु का कारण जानने की इच्छा भी किसी में नहीं थी। इससे उनकी हीन दशा का पता चलता है।

दूसरा अर्थ किशनदा ही उपयोग करते थे वे इसे अपनों से मिली अपेक्षा के लिए उपयोग करते थे — "जो हुआ होगा"। बस अपना नियम अपना हुआ।

प्रश्न:3 'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर: 'समहाउ इंप्रापर' का अर्थ है — कुछ न कुछ गलत जरूर है। यशोधर बाबू द्वारा इस वाक्यांश का प्रयोग करना, वास्तव में आज की स्थिति का सच्चा वर्णन करना है। आज परिवार समाज और राष्ट्र में कहीं-कहीं कुछ-न-कुछ गलत जरूर हो रहा है। फिर यशोधर बाबू जैसे सिद्धांतवादी लोगों के लिए ऐसी स्थिति को स्वीकारना सहज नहीं है। उनका तकिया कलाम निम्न संदर्भों में प्रयुक्त हुआ है —

(i) साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलना

(ii) दफ्तर में सिल्वर वैडिंग

(iii) स्कूटर की सवारी पर

(iv) अपनों से परायेपन का व्यवहार मिलने पर

(v) डी.डी.ए. फ्लैट का पैसा न भरने पर

(vi) शादी के संबंध में बेटी द्वारा स्वयं निर्णय लेने पर

(vii) केक काटने की विदेशी परंपरा आदि पर।

इन संदर्भों से स्पष्ट होता है, कि यशोधर बाबू समय के हिसाब से अप्रासंगिक हो गए हैं, इस कारण वे उपेक्षित रह गए।

प्रश्न: 4 यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे?

उत्तर: 4 यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है मेरे जीवन पर मेरे बड़े भाई साहब का प्रभाव है वे बड़े शिक्षा-विद् हैं। उन्होंने हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, उन्हें कई विषयों का गहन ज्ञान है। परिवार वाले उन्हें डॉ० बनाना चाहते थे, परंतु उन्होंने साफ मना कर दिया तथा शिक्षक बनना स्वीकार किया। आज वे विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर हैं। उनके मार्ग-दर्शन से मैंने पढ़ाई में मेहनत की तथा अच्छे अंक प्राप्त किए अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया, मुझे कई ईनाम भी मिले। मैं बड़े भाई की सरलता व सादगी से बहुत प्रभावित हूँ।

प्रश्न: 5 वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर: 5 ये कहानी आज समय की पारिवारिक संरचना और उसके स्वरूप का सही अंकन करती है। आज की परिस्थितियाँ इस कहानी की मूल्य संवेदना को प्रस्तुत करती हैं। आज के परिवारों में सिद्धांत और व्यवहार का अंतर दिखाई देता

है। आज के परिवारों में भी यशोधर बाबू जैसे लोग मिल जाते हैं जो चाहकर भी स्वयं को बदल नहीं सकते। ये कहानी वर्तमान समय की पारिवारिक संरचना और स्वरूप को अच्छे ढंग से प्रस्तुत करती है।

प्रश्न: 6 निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे / कहेंगी और क्यों?

(i) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

उत्तर: इस कहानी में मानवीय मूल्यों, भाईचारा, प्रेम रिश्तेदारी, बुजुर्गों का सम्मान आदि को हाशिए पर दिखाया गया है। यशोधर पुरानी परंपरा के व्यक्ति हैं, जबकि उनके बच्चे पाश्चात संस्कृति से प्रभावित हैं, वे सिल्वर वैडिंग जैसे पाश्चात परंपरा का निर्वाह करते हैं।

(ii) पीढ़ी का अंतराल

उत्तर: यशोधर बाबू स्वयं पीढ़ी के अंतराल को स्वीकार करते हैं। इन सबके बावजूद ये कहानी पीढ़ी के अंतराल को स्पष्ट करती है। वे मानते हैं कि दुनियादारी के मामले में उनका परिवार उनसे आगे है, जबकि वे स्वयं पुराने आदर्शों व मूल्यों से जुड़े हुए हैं।

theboardstudy.com

(iii) पाश्चात् संस्कृति का प्रभाव

उत्तर: वे जिन सामाजिक मूल्यों से बचना चाहते हैं नयी पीढ़ी उनका विरोध करती है, नयी पीढ़ी पुरानी सादगी को बेकार मानती है, वह रिश्तेदारी निभाने को घाटे का सौदा बताती है, इन्हीं सब मूल्यों से प्रभावित होकर यशोधर बाबू वर्तमान पीढ़ी को पाश्चात् संस्कृति का प्रभाव बताते हैं।

प्रश्न: 8 यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए कथनों में से आप जिसके समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए।

(i) यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं हैं।

उत्तर: प्रस्तुत कथा में यशोधर बाबू में एक तरह का द्वन्द है, जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है, पर पुराना छूटता नहीं इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है। ये बातें कहानी पढ़ने के बाद यशोधर बाबू पर पूर्णतः लागू होती हैं, वे पुरानी सोच के व्यक्ति हैं।

समाज को वे अपने मूल्यों के हिसाब से चलाना चाहते हैं वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश हैं उन्हें किशनदा की मौत का कारण

Date :
P. No. : 07

छोड़ नहीं पाते वे स्वयं को
समझ में आता है, वे स्वयं को उपेक्षित मानने लगते हैं, वे चाहते हैं कि नयी बात में उन्हें खुशी होती है परंतु यह भी दुख है कि ये सब बातें उन्हें ठीक नहीं लगती ऐसे व्यक्तियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार जरूरी है।

15/7/24

theboardstudy.com